HOME WRITTEN

(97)

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समयः तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंकः 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 02 23/07/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 140

टिप्पणी (Remarks): उत्तम प्रयास। व्याख्या में काव्य-सौन्दर्य के अंतर्गत एक-दो विशेषताएं और लिख देते तो और बेहतर दिखता।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: 10 × 5 = 50

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ (काव्यखण्ड) ~~कबीर~~ हिन्दी कविता के क्रांतिकारी कवि कबीरदास द्वारा रचित हैं। कबीर उपरोक्त पंक्तियों में ईश्वर के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन करते हुए दीपक के माध्यम से ईश्वर की प्रार्थना की व्यंजना कर रहे हैं।

व्याख्या: कबीर कहते हैं कि मैंने ~~मन रूपी~~ ~~की~~ शरीर रूपी दीपक में प्रेम रूपी तेल भर कर कभी न घटने वाली बाती भी डाल दी है। बाती से तात्पर्य यहाँ कभी खत्म न होने वाली ईश्वर भक्ति से है। इस तरह कबीर कह रहे हैं कि उन्होंने ईश्वर से मिलने का संपूर्ण इंतजाम कर लिया है और एक बार ईश्वर प्राप्ति हो जाने के बाद इस संसार में वापस आने का अब कोई मन्तव्य नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यसौन्दर्य

1. कबीर की भाषा पँचमेल खिचड़ी है, जिसमें विभिन्न भाषा के शब्द उपयुक्त रूप में प्रयुक्त हैं।

2. रूपक अलंकार का सुन्दर प्रयोग

3. रूपक के साथ-साथ ही अन्योक्ति का भी प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यखण्ड सूरदासकृत सूरसागर के भ्रमरगीतसार से उद्धृत हैं। उपरोक्त पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव के लगातार शुष्क ज्ञान मार्गी भावों से विचलित होकर उद्धव की ढीठ प्रकृति का उपहास कर रही हैं।

व्याख्या: गोपियाँ कहती हैं कि जिसकी जैसी प्रकृति (आदत) होती है उसे सुधारना अत्यन्त दुश्वार व कठिन काम है। वे कुत्ते का उदाहरण देते हुए कहती हैं कि कुत्ते की पूँछ का स्वभाव टेढ़ा रहना है और अनन्त प्रयत्नों के बावजूद उसे सीधा नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार कौवा अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण नहीं छोड़ता, काले कम्बल का रंग धोने के बावजूद नहीं जाता है, उसी प्रकार उद्धव लाख मना करने के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बावजूद निर्गुण ज्ञानमार्गी वक्तव्यों का बखान बन्द नहीं करेंगे। सूर ने उपमानों की झड़ी लगाते हुए उद्धव की उपमा सर्प से भी कर डाली है। जैसे सर्प ~~कि~~ ~~8~~ डसता तो है ही भले ही उससे उसका पेट नहीं भरता उसी प्रकार उद्धव भी ज्ञान देने से बाज नहीं आएंगे

काव्यसौन्दर्य :

1. गोपियों के कथन में तिक्तता और वाग्विदग्धता का भाव प्रदर्शित हो रहा है।
2. उपमानों की झड़ी लगाने की सूर की प्रवृत्ति को आचार्य शुक्ल ने उनके काव्यकर्म की कमजोरी बताया है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परवत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यखण्ड मध्यकाल के अवधी के आख्यान व प्रेम कीपीर के कवि मलिक मुहम्मद जायसी के प्रसिद्ध ग्रंथ पद्मावत के नागमति वियोग खण्ड से उद्धृत है। कवि नागमती के वियोग का चित्रण प्रकृति पर आरोपित करते हुए कर रहे हैं और बता रहे हैं कि किस प्रकार प्रकृति नागमती वियोग में उद्दीपन का कार्य कर रही है। कवि विरहदग्ध नागमती की दशा का अत्यन्त मार्मिक चित्रण भी कर रहे हैं।

व्याख्या: जायसी कहते हैं कि ज्येष्ठ का मास तप रहा है लू चल रही है, बवंडर उठ रहा है एवं पहाड़ धूधूकर गर्म हो रहे हैं। इस दग्ध माहौल में नागमति का विरह गाज की भाँति फिर जाग गया है। नागमती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का तन इतना तप्त है कि चारों तरफ से अति ग्रीष्म पवन चला रहा है। इसने लंका का दाह तो कर ही दिया है। विरह का वियोग इतना अधिक है कि यमुना नदी जलकर काली हो गई है। नागमती का स्वयं भी इस विरह में बुरा हाल है; उसके शरीर का माँस सूख गया है, विरह उसे ऐसे खा रहा है जैसे कोई भूखा कौवा। विरह रूपी आग ने माँस का भक्षण तो कर ही लिया है अब हड्डियाँ भी खाने लगा है। जायसी कहते हैं कि नागमती का विरह इतना तीव्र है कि पर्वत, समुद्र, मेघ, चंद्र, सूर्य कोई इसकी आग को सहन नहीं कर सकता। जायसी ऐसी सती की सराहना करते हैं जो इस कठिन विरह में दग्ध है।

6/10

काव्य सौन्दर्य :

1. नागमती के विरह को आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य की अमूल्य वस्तु बताया है'
2. बारहमासा काव्यरूढ़ि का प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ समन्वय चेतना के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास कृत 'कवितावली' से उद्धृत हैं। तुलसी कलियुग के आर्थिक संकटों की समीक्षा करते हुए लोगों के आचरण में व्याप्त भ्रष्टाचार की ओर संकेत कर रहे हैं।

व्याख्या: तुलसी कहते हैं कि चाहे वह किसान हो, बनिक हो, भिखारी हो या भाट हो किसी की भी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। सभी पेट की चिन्ता से परेशान हैं। पेट की चिन्ता व आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है कि मनुष्य हर प्रकार का ऊँच, नीच व धर्म अधर्म करने पर विवश है। कुछ मनुष्य तो यहाँ तक विवश हैं कि पेट के लिए अपनी सन्तानों अर्थात् बेटा - बेटी तक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

HOME WRITTEN

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

को बेचने को तैयार हैं।

काव्य सौन्दर्य :

1. कवितावली में कबीर ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

2. मध्यकालीन अर्थव्यवस्था का इतना स्पष्ट चित्रण करने वाले तुलसी एकमात्र कवि हैं।

3. तुलसी ने अनुप्रास का सुन्दर प्रयोग किया है। इसी कौशल के कारण आचार्य शुक्ल ने इन्हे 'अनुप्रास का बादशाह' कहा है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत माँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यखण्ड सूरदास कृत 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत हैं। उपरोक्त पंक्तियों में गोपियाँ योग व ज्ञान का मार्ग सिखाने आये 'उद्धव' का उपहास करते हुए योग व ज्ञान की शुष्कता तथा उनके कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम की दृढ़ता को प्रदर्शित कर रही हैं।

व्याख्या: गोपियाँ उद्धव का उपहास करते हुए कहती हैं कि पंडित उन्हें योग सिखाने आया है। ये पुराणों को लादे हुए ~~बन~~ उन बनजारों की तरह प्रतीत हो रहे हैं जो अपने व्यापार हेतु ग्राम-ग्राम भटकते रहते हैं। गोपियाँ कहती हैं कि हमारा ध्यान तो कमलनयन भगवान कृष्ण की भक्ति में है, जो कोई रांड़ होवे अर्थात् जिसका कोई पालनहार न होवे वे जोग (योग)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सीखें। फिर गोपियाँ भ्रमर की रचना करते हुए पूँछती हैं कि एक स्थान में कृष्ण का प्रेम और योग रूपी दो तलवारें कैसे रह सकती हैं। गोपियाँ कहती हैं कि भला कोई हाथी के साथ गन्ना रख सकता है? गोपियाँ उद्धव से प्रश्न करती हैं कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी भूख बिना दही, दूध खाए, हवा खाने से मिट गई हो गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव कुछ तो लोकधर्म व प्रकृति का मान रखो। भला धानियाँ, कुम्हड़ा और धान एक ही मौसम में उत्पन्न हो सकते हैं क्या।

काव्य सौन्दर्य :

1. सगुण भक्ति की स्थापना हेतु सूर वाग्विदग्ध शैली का प्रयोग भावप्रेरित वक्रोक्ति के साथ अत्यन्त सुन्दरता से कर रहे हैं।

2. रूपक अलंकार व उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'श्रृंगार रस का ऐसा सुंदर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।' सूरदास के भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन के औचित्य पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूरदास की कविता श्रृंगार रस की पूर्णता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। श्रृंगार के सभी रूप चाहे वह वात्सल्य हो, सख्य हो या दाम्पत्य हो तथा इनमें भी सँयोग तथा वियोग दोनों पक्षों की जितनी विस्तृत व गहरी अभिव्यक्ति सूर के काव्य में देखने को मिलती है उतनी कहीं और नहीं।

इसी परंपरा का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण भ्रमरगीत है, जो कृष्ण वियोग में दग्ध गोपियों एवं उन्हें ज्ञान का मार्ग सिखाने आए उद्धव के बीच हुए तर्क-वितर्कों ~~के~~ के माध्यम से, वियोग श्रृंगार को तो चित्रित करता ही है, ~~परन्तु~~ इसके साथ ही कृष्ण की भ्रमरवृत्ति को निशाना बनाकर एवं उद्धव के ज्ञानमार्गी शुष्क पाठ पर उपालम्भ का भी उत्कृष्टतम चित्रण करता है।

~~भ्रमरगीत के~~ उपालम्भ काव्य के रूप में भ्रमर गीत की श्रेष्ठता यशोदा द्वारा नन्द पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उपालम्भ से शुरू होती है। नन्द कृष्ण को मथुरा लेकर तो गए, लेकिन वापस लेकर नहीं आए। यशोदा उलाहना देते हुए कहती हैं

- "नन्द ब्रज लीजै ठोक बजाय
देहु बिदा मिलि जाहुँ मधुपुरी जहँ गोकुल के राय"

विरह श्रृंगार में कृष्ण के सखा भी दुःखी हैं एवं कृष्ण पर उपालम्भ करते हुए कहते हैं कि "भये कान्ह मधुपुरी राजा, अहिर कहत लजात" परन्तु उपालम्भ का सबसे उत्कृष्टतम एवं सघन रूप गोपियों के वाक्यों में दिखता है जहाँ वे कृष्ण की राजनीति पर उलाहना देती हुई कहती हैं कि "हरि हैं राजनीति पढ़ि आए
इक अति चतुर हुते पहले ही, अरु करि नेह दिखाए"

गोपियाँ मथुरा के रूप में नगर की संस्कृति पर भी व्यंग्य करती हैं और कहती हैं कि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"यह मथुरा काजर की कोठरी, जे
आवहिं तेहिं कारे,
तुम कारे, सुफलक सुत कारे, कारे
मधुप भँवारे"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भ्रमरगीत में वात्सल्य, सख्य एवं दाम्पत्य शृंगार के वियोग रूप का जितना विशद चित्रण करने में सूर को सफलता मिली है उतनी शायद किसी अन्य कवि को नहीं मिली एवं उपालम्भ की पूर्णता के कारण आलोचकों को कहना पड़ा कि "शृंगार रस का ऐसा उपालंभ काव्य दूसरा नहीं है"।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर के दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीरदास का दर्शन सदैव से आलोचकों के बीच चर्चा एवं विवाद का विषय रहा है। कहीं तो उनपर अद्वैतवादी वेदान्त दर्शन का प्रभाव अधिक माना गया तो कुछ आलोचकों ने सूफी दर्शन और इस्लामी एकेश्वरवाद के प्रभाव को अधिक महत्व दिया।

कबीर के दर्शन के निर्धारण से ~~पूर्व~~ पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि कबीर निरक्षर थे, अतः उन्होंने किसी दर्शन को पढ़ा नहीं था, परन्तु बहुश्रुत होने के कारण विभिन्न दार्शनिक सरणियों से वे परिचित थे। पुनः कबीर का स्वभाव ऐसा था कि वे किसी भी दर्शन या साधना पद्धति पर यांत्रिकता के साथ विश्वास नहीं करते थे। उन्हें जिस दर्शन से जो बात अच्छी लगी वह ग्रहण की व शेष को झाड़ फटकार कर चल दिए। अतः यह निश्चित है कि भाषा की ही भाँति उनका दर्शन भी कई सिद्धान्तों का मेल ही था।

ब्रह्म और आत्मा के उनके विचार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शंकर के अद्वैतवादी दर्शन से मेल खाते हैं, जहाँ वे ब्रम्ह जीव एकत्व की बात करते हैं एवं माया को दिग्भ्रमित करने वाली शक्ति के रूप में देखते हैं वे जगत को ब्रह्म का विवर्त मात्र ही मानते हैं और कहते हैं कि "यह संसार कागद की पुड़िया बूँद परे घुलि जाना है" ।

परन्तु वे ब्रह्म व मोक्ष की उपलब्धि के मार्ग के मामले में शंकराचार्य से मतैक्य न रखते हुए भक्ति मार्ग को काम्य मानते हैं। यहाँ उनपर रामानुज के विशिष्टाद्वैतवादी दर्शन का प्रभाव दिखता है। उन्होंने सगुण राम का नाम रामानन्द से लेकर उसे निरगुण करते हुए "निरगुण राम जपहुँ रे भाई" का संदेश दिया। "मैं तो कूता राम का मुतिया मेरा नाँव" कहते हुए वे प्रपत्तिवाद के वैष्णव वेदान्ती सिद्धान्त को भी मानते हैं। समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम की भावना की बात कबीर ने प्रमुख रूप से करते हुए बोला।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी कि "साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय" यहाँ भी वैष्णव वेदान्ती मार्ग का ही प्रभाव स्पष्ट है।

कबीर पर सूफी दर्शन का भी प्रभाव देखने को मिलता है। जहाँ वे भाव व प्रेम में डूबी उक्तियाँ कहते हुए खुदा बंदे के मिलन की बात करते हैं, वहाँ सूफियों से प्रभावित दिखते हैं। ऐसा एक उदाहरण है

" तलफै बिन बालम मोर जिया
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया
तलफ - तलफ के भोर किया"

वस्तुत: कबीर का दर्शन पँचमेल खिचड़ी ही है एवं इसे अनुभव की प्रामाणिकता के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए।

7/15

प्रश्नानुरूप उदाहरण और मॉडल उत्तर देखें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'भ्रमरगीतसार' सूर के द्वारा सगुण भक्ति की स्थापना का एक अद्भुत प्रयास माना जाता है।

सूर अपने पदों के माध्यम से गोपियों एवं उद्धव के तर्क वितर्कों को प्रस्तुत करते हैं जहाँ गोपियाँ सगुण भक्ति की समर्थक व कृष्ण के प्रेम में रत हैं तथा उद्धव उन्हें ज्ञान और योग तथा निर्गुण ब्रह्म की सार्थकता बताने का प्रयास करते दिखते हैं।

भ्रमरगीत सार में सूर द्वारा सगुण भक्ति के समर्थन की मान्यता स्पष्ट रूप से दर्शित होती हैं। गोपियाँ उद्धव के हर तर्क का प्रत्युत्तर अपने भावनात्मक तर्कों से देने को तत्पर हैं। वे वाग्विदग्ध शैली में उद्धव से प्रश्न करती हैं

" निरगुन कौन देस को बासी
को है जनक जननी को कहियत
कौन नारि को दासी "

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उद्धव के पुनः प्रयास करने पर गोपियों के कथन और भावपूर्ण होने लगते हैं वे कहती हैं

" उर में माखन चोर गड़े
अब कैसे हूं निकसत नाहीं, तिरहै ह्वै जू अड़े "

अतः अब निरगुन का ज्ञान उनके अन्दर कैसे जाए।

उद्धव के अत्यन्त प्रयास करने पर गोपियों के कथन तीव्र होने लगते है एवं वे उद्धव का उपहास करने की मुद्रा में आ जाती हैं। ऐसा एक उदाहरण द्रष्टव्य है

"आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन ग्यान जोग की
ब्रज में आनि उतारी"

अंततः उद्धव भी 'सगुन के चेरे' हो जाते है और स्वीकार कर लेते हैं कि 'अब अति पंगु भयो मन मेरो'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः यह कहना अनुचित न होगा कि सूर ने भ्रमरगीत के माध्यम से निर्गुण पर सगुण की विजय की स्थापना की है और इसमें वे सफल भी रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहीं नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

व्याख्या : लेखक कुछ प्रश्नों की महानता का चित्रण करते हुए जिज्ञासु भाव की प्रधानता पर बल देते हुए कहता है कि हर प्रश्न का उत्तर ढूंढना सम्भव नहीं है। कुछ प्रश्न सिर्फ इसलिए होते हैं कि उन तक पहुँचा जाए। इतने में ही जीवन की सार्थकता निहित है। दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसे प्रश्नों का उद्देश्य ही जिज्ञासुभाव को उत्पन्न करना होता है, ताकि मनुष्य जीवन के सभी संदर्भों को जिज्ञासा के भाव से जी सके तथा जीवन को सार्थक बना सके।

विशेष : 1. जिज्ञासा की आवश्यकता की व्यंजना
2. विचारपूर्ण, तथा गहरी, गूढ़ भाषा

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

का प्रयोग किया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रणेता कवि एवं ऐतिहासिक नाट्य लेखन के पुरोधा जयशंकर प्रसाद कृत नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई हैं। पंक्तियों में स्कन्दगुप्त स्वगत कथन करते हुए राज-पाठ व भोग की निस्सारता तथा अपनी इच्छाओं पर विचार कर रहे हैं।

व्याख्या : स्कन्दगुप्त को राजभोग की चाह नहीं है, उन्हें तो बौद्धों के समान निर्वाण, योगियों के समान समाधि और पागलों के समान पूर्ण विस्मृति चाहिए ताकि वे इस संसार व राज्यरूपी जंजाल से दूर एकान्त में रह सकें। उनकी चेतना ~~कह~~ (बुद्धि) उन्हें राज्य दायित्वों का आभास कराती है, किन्तु स्कन्दगुप्त का मन कहता है कि वे इन सांसारिक जंजालों के हाथों के खिलौने मात्र हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उनका मुकुट एक मजदूर की टोकरी से भी निम्न स्तर का है।

(ख) सौन्दर्य :

1. जयशंकर प्रसाद स्कन्दगुप्त के माध्यम से शैवाद्वैतवादी समरसता की स्थापना का प्रयास कर रहे हैं।

2. ~~भाषा ऐतिहासिक वातावरण व लेखक की अभिरुचि सम्पन्न प्रवृत्ति के कारण तत्समबहुला हो गई है।~~

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं—पर ऐसा मान?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यखण्ड आधुनिक उपन्यास की सशक्त हस्ताक्षर 'मन्नू भंडारी' के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ~~उद्धृत~~ उद्धृत हैं। मन्नू भंडारी इन पंक्तियों में दा साहब के कुटिल राजनीतिक व्यवहार व आमजन के भोले-पन को व्यंजित कर रही हैं।

व्याख्या: जैसे ही दा साहब ने हीरा को अपनी गाड़ी में बिठाया गाँव की भीड़ आश्चर्यचकित हो गई और दा साहब की चतुराई को न समझते हुए उनके बड़प्पन की कायल हो गई। लोग दा साहब की तुलना भगवान राम से करते हुए शबरी-निषाद की कथाएँ याद करने लगे और यहाँ तक कि कुछ लोगों को हीरा के बेटे की मौत पर भी ईर्ष्या होने लगी कि बेटे की मौत के कारण हीरा को ऐसा सम्मान नसीब हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. स्वतन्त्रता पश्चात की वोट आधारित कुत्सित राजनीति का अत्यन्त धारदार व्यंगपूर्ण चित्रण मन्नू भंडारी द्वारा किया गया है।

2. गाँव के आम जन की सिधाई व भोलेपन की सुन्दर व्यंजना।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन के दौर के पुरोधा नाटककार 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एकदिन' से उद्धृत हैं। राकेश कालिदास के ऐतिहासिक चरित्र के माध्यम से आधुनिक मध्यवर्गीय मानव की उस मानसिक स्थिति की व्यंजना कर रहे हैं जहाँ वह जीविकोपार्जन की विवशता में पड़कर गलत निर्णय का शिकार हो जाता है और अपना सम्पूर्ण जीवन अप्रमाणिकता के साथ संत्रास व विसंगतिबोध में व्यतीत करता है।

व्याख्या: कालिदास को अपने निर्णयों की अप्रामाणिकता का अहसास हो गया है। वह कहता है कि उसने सुविधा और सम्मान के मोह में पड़कर राजकर्म को चयनित किया, जबकि वह उसके स्वभावानुकूल था ही नहीं। उसका स्वभाव तो ग्राम्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन में रहकर कार्यकर्म व भावनात्मक कार्यों के अनुरूप था, जिससे वह दूर हट गया है। जब भी कालिदास को ग्राम्य जीवन की स्मृति होती उसे अपने ~~स्वाभाविक~~ स्वाभाविक चरित्र से दूरी का अहसास होने लगता।

<u>विशेष</u>: 1. भाषा भावानुकूल एवं बोधगम्य है

2. अस्तित्ववादी दर्शन की झलक उपरोक्त कथनों में दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~संदर्भ~~

व्याख्या : लेखक कहना चाहता है कि सांसारिकता का त्याग करके, स्वयं शांति सुख भोगकर उपदेश देने वालों का महत्व हिन्दू धर्म में कम है। उनकी अपेक्षा जो लोग संसार से तारतम्य बिठाते हुए सात्विकता को जगाते हैं, उनका महत्व अधिक है। इसलिए हिन्दू धर्म में उपदेशकों को अवतार का दर्जा प्राप्त नहीं है, वरन् जिन्होंने अपने कर्मों से इस संसार के लोगों के उद्धार में भूमिका निभाई है उनको ही अवतार रूप में पूज्य माना गया है।

विशेष : 1. अवतारवाद के सिद्धान्त की व्याख्या की व्यंजना।

2. कर्म की प्रधानता पर बल दिया गया है। ऐसा ही भाव तुलसीदास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की पंक्तियों 'करम प्रधान बिस्व रचि राखा' में प्रदर्शित होता है।

3/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व गहरी अभिरुचियों की परिपूर्णता के लिए जाना जाता है। चाहे वह इतिहास के प्रति हो या दर्शन के प्रति। प्रसाद दर्शन के गहरे अध्येता रहे हैं और उन्होंने अध्ययन के साथ-साथ ~~दर्शन~~ अपनी दार्शनिक मान्यताओं का अपनी रचनाओं में प्रचुर प्रयोग किया है। 'स्कन्दगुप्त' भी इस ~~स्कन्दगुप्त~~ परंपरा में अपवाद नहीं है।

प्रसाद यूं तो प्रत्येक दर्शन को महत्व देते थे, परन्तु उन पर सर्वाधिक प्रभाव आचार्य अभिनवगुप्त द्वारा प्रस्तावित 'शैवाद्वैतवाद' या प्रत्यभिज्ञा दर्शन का है, जिसमें जीवन ज्ञान, क्रिया एवं इच्छा की समरसता की उपलब्धि को ही जीवन का लक्ष्य माना जाता है।

स्कन्दगुप्त नाटक में 'देवसेना' ऐसी ही समरसता की मूर्ति नजर आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नाटक की शुरुआत 'अधिकार सुख कितना मादक व सारहीन है' कहते हुए होती है, जहाँ प्रसाद योग की निस्सारता को स्कन्दगुप्त के माध्यम से प्रस्तावित करते हैं। शैवाद्वैतवादी दर्शन की छाप नाटक के अन्त में देवसेना के कथन 'समस्त सुखों का अन्त है, जिसमें सुखों का अन्त नहीं इसलिए सुख करने ही न चाहिए' के माध्यम से गहन रूप में दिखती है जहाँ सांसारिक सुखों-दुखों से परे शांति की खोज पर बल है।

प्रसाद ने धातुसेन के माध्यम से बौद्धदर्शन के 'प्रतिक्षण परिवर्तनशीलता' के सिद्धान्त को भी स्वीकार्य का भाव दिया है। धातुसेन कहता है "परिवर्तन ही सृष्टि का नियम है जीवन है, निश्चेष्ट शांति मरण है"।

प्रसाद छायावाद के प्रणेता माने गये हैं और छायावाद के भावनामूलक प्रेम की छाप उनकी हर रचना में दृष्टिगत है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत स्कन्दगुप्त में उन्होंने छायावाद की स्वीकृति को देवसेना के माध्यम से स्थापित तो किया, परन्तु 'कामाध्यात्मवाद' को भी स्वीकार करते हुए मानवीय भावों की सहजता एवं स्त्री के आकर्षण स्वभाव को प्रकृति का स्वाभाविक नियम माना है। वे कहते हैं " प्रकृति स्त्री और पुरुष की गेंद लेकर खेलती है, पुरुष उद्दाल दिया जाता है उपेक्षणा होता है, स्त्री आकर्षण करती है" ।

वस्तुत: 'स्कन्दगुप्त' प्रसाद के समस्त दर्शनों के विभिन्न सिद्धान्तों के स्वीकार्य का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ प्रसाद की मान्यताएँ संश्लिष्ट रूप में संयोजित हुई हैं।

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा 1958 में रचित नाटक है जो 'मोहन राकेश' के रचनाकर्म के सर्वोत्कृष्ट उदाहरणों में गिना जाता है।

1958 का दौर वह दौर था जहाँ आज़ादी के स्वप्नों से मोहभंग हो चुका था और 'नवलेखन' इसी ~~मोह~~ ~~स~~ मोहभंग को संप्रेषण का माध्यम बना रहा था।

दोनों विश्वयुद्धों की समाप्ति के बाद की भयावह स्थितियों ने मानव को अपने अस्तित्व पर ~~प्रश्च~~ प्रश्नचिह्न खड़े करने पर विवश कर दिया था तथा आजीविका के संघर्ष में ग्रामीण जीवन से शहर की ओर पलायन किया मध्यवर्ग ~~ह~~ 'संत्रास' 'अजनबीपन' व 'रिश्तों की कृत्रिमता' से जूझ रहा था।

ऐसे समय में मोहन राकेश इत्यादि लेखकों ने अपनी रचनाओं में इन्हीं भावनाओं को स्थान दिया ~~ह~~ एवं 'आषाढ़ का एक दिन' इसी अस्तित्ववादी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दर्शन के प्रभाव का उदाहरण है। अस्तित्ववाद प्रामाणिक मनुष्य उसे मानता है जो अपने निर्णय स्वयं लेता है और उस निर्णय से उत्पन्न पीड़ा को झेलने को तैयार रहता है। अस्तित्ववाद के अनुसार जीवन की सबसे बड़ी समस्या सही निर्णय न ले पाने की समस्या है और आषाढ़ का एकदिन का 'कालिदास' इसी समस्या से ग्रसित दिखता है कालिदास का स्वभाव ग्राम्य जीवन में प्रकृति के पास रहकर काव्य कर्म करने के अनुकूल है, परन्तु वह सत्ता के हाथों ~~प्रयुक्त~~ होने को विवश है। मल्लिका हालांकि कुछ हद तक प्रामाणिकता का संदेश प्रेषित करती है, परन्तु वह भी दूसरे व्यक्ति के हाथ में अपना अस्तित्व सौंप ही देती है। विलोम का भी यही हाल है। अतः यह स्पष्ट है कि 'आषाढ़ का एक दिन' के सभी पात्र जिस संत्रास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व पीड़ा को झेल रहे हैं, वह अप्रामाणिक जीने के कारण ही है।

यूँ तो नाटक पर अस्तित्ववाद का प्रभाव स्पष्ट है, परन्तु राकेश ने इसे इतनी सहजता से प्रयोग किया है, अनभिज्ञ पाठक भी नाटक का सम्पूर्ण रसास्वादन कर सके।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारत-दुर्दशा। नाटक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा 1875 में रचित हुआ।

नाटक की रँगमँचीयता पर विचार करने से पूर्व नाटक को लिखने के पीछे के भारतेन्दु के उद्‌देश्य को जान लेना आवश्यक है। 'भारत-दुर्दशा' के पीछे भारतेन्दु का उद्‌देश्य आम जन मानस तक नवजागरण की चेतना को पहुँचाना था, अत: इसकी सरल रंगमंचीयता अनिवार्य थी। दूसरे भारतेन्दु स्वयं भी रँगकर्म से जुड़े रहे हैं एवं मंचन को नाटक का अभिन्न अंग मानते रहे हैं।

भारतदुर्दशा की रँगमँचीयता कई मायनों में सरल व उत्कृष्ट है। नाटक में कुल 5 दृश्य हैं; जिन्हें कुछ पर्दों, मेज कुर्सी, व कुछ साधारण सामान के माध्यम से खेला जा सकता है।

नाटक की भाषा भी आम बोलचाल की लोकभाषा है, जिसमें कुछ आलोचकों ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ग्राम्यत्व व अश्लीलत्व दोष बताया है, परन्तु ये दोष साहित्यिक दृष्टि से भले दोष हों, मंचन में तो सहायक ही हैं।

प्रचलन में न होने के बावजूद भारतेन्दु ने अभिनय संकेत जैसे कि आलस्य के मामले में 'मोटा जम्हाई लेता आदमी' आदि पर्याप्त मात्रा में छोड़े हैं। प्रकाश की परंपरा न होने के बावजूद प्रकाश संकेत जैसे कि दीपकों का बुझाना तथा ध्वनि संकेत भी निर्देशन को सहज बनाते हैं।

नाटक की चरित्र योजना भी इसके मंचन में सहायक ही है। सभी पात्र साधारण भावों व वस्तुओं के प्रतीक हैं जिससे जनमानस आसानी से जुड़ाव महसूस कर लेता है।

कुल मिलाकर 'भारत दुर्दशा' की रंगमंचीयता ही वह कारण थी जो नाटक की वृहद सफलता में सहायक बनी।

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिये। क्या आप इस नाटक का इससे बेहतर नाम प्रस्तावित कर सकते हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना का सर्वोचित शीर्षक वह होता है जो रचना के प्रतिपाद्य को संश्लिष्ट रूप में प्रेक्षित करने में सफल हो तथा प्रथमदृष्टया रचना के कथ्य व भाव की एक झाँकी पाठक के मन में प्रस्तुत करने में सफल हो।

किसी रचना का शीर्षक 'चरित्रप्रधान' भी हो सकता है, घटना प्रधान भी तथा स्थिति प्रधान भी। यह पूर्णतः रचना के उद्देश्य, कथ्य तथा लेखक के कौशल पर निर्भर करता है कि शीर्षक कितना सार्थक है।

'आषाढ़ का एक दिन' एक ऐसा शीर्षक है जो एक प्राकृतिक स्थिति को संप्रेषित करता है। प्रश्न यह उठता है कि जहाँ मोहन राकेश ऐतिहासिक कलेवर में आधुनिक मानव की पीड़ा को प्रेषित करना चाहते थे तो ऐसा प्रकृतिमूलक शीर्षक उन्होंने क्यों चुना।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसका एक औसत उत्तर यह हो सकता है कि नाटक 'कालिदास' पर आधारित है और मेघदूत के 'आषाढ़स्य प्रथमदिवसे' का साधारण अनुवाद राकेश ने कर दिया, परन्तु इतने महान लेखक से ऐसी सतही कल्पना बेमानी प्रतीत होती है।

वस्तुतः राकेश 'भोगे हुए यथार्थ को संप्रेषित करना चाहते थे और कवि के उसी आषाढ़ का एक दिन भोगे हुए यथार्थ को संप्रेषित करने का माध्यम है। मोहन राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' में भी स्पष्ट किया है कि 'यक्ष की पीड़ा कालिदास' की अपनी पीड़ा है और विरहाकुल यक्षिणी मल्लिका ही है।

नागार्जुन ने भी इस विषय पर प्रश्न किया है

" अमल धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर तुम कब तक सोये थे?
कालिदास सच-सच बतलाना, रोया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यक्ष कि तुम रोये थे?

दूसरा तर्क यह हो सकता है कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से राकेश मेघ के स्वभाव को प्रदर्शित करना चाहते होंगे कि जिस प्रकार मेघ बरसकर अपने आप को सम्पूर्णत: अभिव्यक्त करता है, रचनाकार का भी स्वभाव ऐसा ही होना चाहिए। 'आषाढ़ का एक दिन' एक मायने में मल्लिका की भावुकता का भी प्रदर्शन है, जहाँ वह अपने प्रेमी के साथ धारासार वर्षा में भीगकर चरम सार्थकता अनुभव करती है।

वस्तुत: आषाढ़ का एकदिन बहुअर्थों का व्यंजक करने के लिए उपयुक्त शीर्षक है, जो रचनाकार के द्वारा विचारे गये उद्देश्यों को सफलता से प्रेषित करता है।

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एकदिन' मोहन राकेश के रचनाकर्म के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक है। नाटक तीन कालों के समन्वय को साधने का प्रयास करता है 'कालिदास का समय', 1958 यानि रचना के लिखे जाने का दौर तथा आधुनिक मानव की पीड़ा को व्यंजित करने का उद्देश्य लेकर चलने के कारण आज का दौर।

तीनों कालों के समन्वय के उद्देश्य से ही स्पष्ट है कि मोहन राकेश का उद्देश्य न तो इतिहास का पुनर्लेखन था और न ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रक्षेपण।

राकेश ने इतिहास का प्रयोग उपयोगिता तावीहदिष्ट से किया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटक इतिहास और कल्पना के समन्वय को साधते हुए आधुनिक मानव की पीड़ा को व्यंजित करना चाहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कालिदास का चरित्र ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है। ~~तथा~~ उनके बारे में कुछ मान्यताएँ मिथक के रूप में प्रचलित है जैसे कि उनका काली का भक्त होना, वेश्यागामी होना तथा राजकुमारी से विवाह करना। मोहन राकेश ने इन तथ्यों का प्रयोग नाटक में किया है। शेष सभी पात्रों का ऐतिहासिक अस्तित्व नहीं मिलता है जैसे कि प्रियंगुमंजरी, मातुल, विलोम और यहाँ तक कि मल्लिका जो कि नाटक की प्रमुख पात्र है।

मोहन राकेश पर इस दृष्टि से यह आरोप लगाया जा सकता है कि इतिहास से ऐसी छेड़छाड़ कहाँ तक नैतिक है? इसका जवाब देते हुए कई आलोचकों ने कहा है कि मोहन राकेश ने किसी ऐतिहासिक तथ्य को विकृत करने का प्रयास नहीं किया जैसा रासो काव्यों में हुआ है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुनः इनका उद्देश्य साहित्य सृजन करना था, न कि इतिहास लेखन और साहित्य में कल्पना का समावेश आवश्यक होता है।

राकेश ने भी कई जगह अपनी ऐतिहासिक दृष्टि प्रस्तावित करते हुए कल्पना के प्रयोग को उचित ठहराया है।

कुल मिलाकर राकेश ने नाटक में कल्पना और इतिहास के समन्वय से कथ्य के संप्रेषण में वृहद सफलता प्राप्त की है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या भारत-दुर्दशा को एक त्रासदी माना जा सकता है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

त्रासदी एक पश्चिमी अवधारणा है, जिसमें नाटक का उद्देश्य श्रोता के नकारात्मक भावों का विरेचन करना होता है। त्रासदी में नायक ~~संघर्षशील~~, साहसी नैतिक तथा न्याय के पक्ष में संघर्षशील होता है तथा हैमर्शिया (नैतिक भूल) के कारण नियति को प्राप्त करता है।

यदि सिर्फ दुखान्त की अवधारणा को ध्यान में रखें तो भारत-दुर्दशा कुछ हद तक त्रासदी के करीब दिखता है इसमें 'भारत' नामक नायक अपनी आंतरिक व बाह्य कमजोरियों के कारण भारत दुर्दैव के प्रयासे आक्रान्त हो जाता है और इस योग्य भी नहीं रह जाता कि पुन: खड़ा हो सके।

परन्तु यदि त्रासदी के तत्वों की समीक्षा करें तो ~~अब~~ न तो इसमें नायक साहसी है और न ही संघर्षशील। वह तो इतना कमजोर और डरपोक है कि खलनायक के अट्टाहस मात्र से बेहोश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो जाता है। इसरा कथानक में द्वंद्व पूर्णत: अनुपस्थित है, जबकि त्रासदी के कथानक में द्वंद्व की उपस्थिति तथा कथानक का दुखद होना आवश्यक लक्षण माने जाते हैं। न ही नाटक में द्वंद्व का विकास है और न ही नायक कोई नैतिक भूल करता है।

वस्तुत: भारतेन्दु का उद्देश्य ही त्रासदी की रचना करना नहीं था। वे तो केवल नवजागरण के सिद्धान्तों को आम जनमानस तक पहुँचाकर उनकी चेतना का उदय चाहते थे, अत: नाटक में त्रासदी के तत्वों की खोज करना ही अपने आप में अनुचित प्रश्न है।

2/5

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation